इकाई 5 पंजाब

संरचना

5.0 उद्देश्य

यह इकाई 18वीं सदी के मध्य से 19वीं सदी के मध्य तक पंजाब में स्वतंत्र राज्य के घटनाक्रम पर है। इस इकाई में आप सीख सकेंगे:

- पंजाब की राजनीति में सिक्ख राज्य की स्थापना से पूर्व की घटनाओं के विषय में,
- सिक्ख धार्मिक व्यवस्था के राजनैतिक शक्ति के रूप में परिवर्तन के विषय में,
- वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से सिक्ख राज्य का उदय हुआ और अंतिम रूप से इसका ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था में विलय,
- राज्य संगठन और
- सिक्ख राज्य का चरित्र।

5.1 प्रस्तावना

इकाई 2, 3 तथा 4 में हमने विवेचन किया कि किस प्रकार से बंगाल, अवध, हैदराबाद, मैसूर और मराठा क्षेत्र में 18वीं सदी के दौरान स्वायत्त राजनीतिक प्रभुत्व का विकास हुआ। यहाँ पर हमारा केन्द्र बिंदु पंजाब होगा। अन्य मुगल प्रांतों की तुलना में पंजाब में विकास की धारा भिन्न थी। पंजाब के संदर्भ में स्वतंत्र राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना किसी मुगल गवर्नर द्वारा नहीं बल्कि स्थानीय लोगों (सिक्खों) द्वारा की गई थी। यह देखना स्वाभाविक रूप से महत्वपूर्ण होगा कि किस प्रकार से सिक्खों ने प्रांत से मुगल प्रभुत्व को उखाड़ दिया और इसके स्थान पर अपना शासन कायम किया। इस इकाई में पहले आपका परिचय सिक्ख राज्य के उदय से पूर्व की पंजाब की राजनैतिक स्थिति से कराया जाएगा। फिर इस इकाई में यह बताया गया है कि कैसे सिक्ख धार्मिक व्यवस्था का परिवर्तन एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में हुआ और इसके बाद सिक्ख राज्य की स्थापना कैसे हुई। अंत में इस इकाई में सिक्ख राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था और सिक्ख शासन के चरित्र का विश्लेषण किया गया है।

5.2 स्वायत्तता से पूर्व पंजाब की राजनीति

18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में मुगल साम्राज्य के विखण्डन के तुरंत बाद बहुत से प्रांतों में स्वतंत्र राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित हो गया। बंगाल, अवध और हैदराबाद प्रांतों के गवर्नरों ने सफलता पूर्वक अपने स्वतंत्र प्रांतों का संचालन किया। परन्तु पंजाब जैसे प्रांत ने इस प्रकार के मार्ग का अनुसरण नहीं किया। जकारिया खान 1726–1745 में लाहौर का गवर्नर था और उसने अपनी स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया परन्तु एक स्वतंत्र राजनैतिक व्यवस्था की स्थापना की प्रक्रिया में वह असफल रहा। अन्य दूसरे प्रांतों की तुलना में पंजाब की स्थिति बिल्कुल भिन्न थी। इस समय में पंजाब की राजनीति में निम्नलिखित शक्तियों का प्रभुत्व था:

- स्वतंत्र राजनैतिक अधिपत्य के लिए सिक्खों का संघर्ष,
- पहले ईरानी विदेशियों का और फिर अफगानों का आक्रमण,
- मराठा आक्रमण, और
- प्रांतीय प्रशासन की आंतरिक स्पर्धा।

18वीं सदी के दौर में सिक्खों का आंदोलन धार्मिक आंदोलन से एक राजनैतिक आंदोलन में परिवर्तित हो गया और इसका मुख्य लक्ष्य मुगल साम्राज्य के आधिपत्य का विरोध करना था। 18वीं सदी के प्रारंभ में गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के तुरन्त बाद किसान विद्रोह हो गया जिसका नेतृत्व उनके शिष्य बंदाबहादुर ने किया। प्रांत पर अपने नियंत्रण को बनाये रखने के लिए मुगल अधिकारियों के लिए यह बड़ा कठिन समय था। 1715 में बंदाबहादुर को फांसी देने के बाद मुगलों को कुछ ही समय के लिए चैन की सांस लेने का अवसर मिला। सिक्खों ने स्वयं को छोटे-छोटे बहुत से अति गतिशील गुटों में संगठित किया जिनको जत्था कहा जाता था और पुन: मुगल साम्राज्य के अधिपत्य को गंभीर चुनौती दी।

1739 में ईरानी आक्रमणकारी नादिर शाह के आक्रमण ने मुगल शासकों के लिए पंजाब में और अधिक गंभीर समस्या उत्पन्न कर दी। नादिरशाह के द्वारा प्रांत पर हमले तथा लूट ने पंजाब में साम्राज्य के प्रभुत्व को काफी कमजोर कर दिया। ईरानी आक्रमण के साथ अहमदशाह अब्दाली के नेतृत्व में अफगान आक्रमणों की ऐसी श्रृंखला का प्रारंभ हुआ जिसने पंजाब से मुगल प्रभुत्व पर अंतिम तथा निर्णायक आघात किया। इन विदेशी आक्रमणों के लगातार होते रहने तथा प्रांत में विप्लव के कारण मराठों ने पंजाब पर अपना नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया।

इसके अतिरिक्त प्रांत की राजनैतिक अनिश्चितता के लिए अधिक निर्णायक कारण प्रांत के प्रशासन का आंतरिक संघर्ष था। संघर्ष का प्रमुख कारण उत्तराधिकार का प्रश्न था। जकारिया खाँ की मृत्यु के बाद पंजाब की सूबेदारी के उत्तराधिकार के लिए उसके तीनों पुत्रों — याहिया खाँ, शाह नवाज खाँ और मीर बाकी के मध्य रक्त रंजित संघर्ष शुरू हो गया। एक वर्ष तक सूबेदार की नियुक्ति को रोकने के बाद अन्तत: मुगल सम्राट ने याहिया खाँ को सूबेदार नियुक्त कर दिया। परन्तु भाइयों के बीच इससे संघर्ष बन्द न हुआ। अन्तत: शाह नवाज खाँ ने ताकत के बल पर सूबेदार के पद पर अधिकार कर लिया। याहिया खाँ ने दिल्ली को कूच किया तथा मुगल सम्राट मुहम्मद शाह एवं वज़ीर कमरूद्दीन से सहायता माँगी। कमरूद्दीन उसका चाचा तथा ससुर था। दूसरी ओर शाहनवाज खाँ ने सहायता प्राप्त करने के लिए अब्दाली के साथ बातचीत करने की कोशिश की। इसी के साथ अब्दाली तथा मुगल सम्राट के बीच जो संघर्ष शुरू हुआ वह वज़ीर कमरूद्दीन की मृत्यु के साथ समाप्त हो गया और उसके पुत्र मीर मन्नू को लाहौर का सूबेदार नियुक्त कर दिया गया।

दिल्ली में नया वजीर सफदरजंग मीर मन्नू का विरोधी था और उसने उसकी सूबेदारी के विरुद्ध षड्यंत्र करना शुरू कर दिया। शाह नवाज के माध्यम से उसने लाहौर के आस-पास समस्याएँ पैदा की। मीर मन्नू सफलतापूर्वक इस संकट से बाहर निकल गया। परन्तु अब्दाली के नेतृत्व में लगातार अफगान हमलों के कारण मीर मन्नू चैन की सांस न ले सका और अन्तत: अहमद शाह अब्दाली ने उसको पराजित कर दिया। अफगानों के लगातार आक्रमणों से सम्राट को

पंजाब, कश्मीर, और सिंध का परित्याग करने के लिए मजबूर होना पड़ा। अहमद शाह ने अपने पुत्र तिमूर शाह को लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया। परन्तु जालंधर दोआब के फौजदार अदीना बेग खाँ ने मराठों की मदद से तिमूर को पंजाब से निष्कासित कर दिया। प्रांत के प्रशासन को प्रत्यक्ष चलाने में समस्या समझ कर मराठों ने पंजाब की सूबेदार अदीना बेग खाँ को इस शर्त पर दे दी कि वह मराठों को प्रतिवर्ष 75 लाख रुपये का नजराना देगा। अदीना बेग खाँ की मृत्यु के बाद मराठों ने ख्वाजा मिर्जा खाँ को लाहौर का सूबेदार नामजद किया। पंजाब में मराठों की इस बढ़ती शक्ति को अफगान शांति के साथ बैठकर नहीं दे रहे थे। अफगानों ने अब्दाली के नेतृत्व में पुन: आक्रमण किया और 1761 में पानीपत की लड़ाई में मराठों की शक्ति को अंतिम रूप से कुचल दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ये वे परिस्थितियाँ थी जिनके कारण मुगल सूबेदारों को पंजाब में स्वतंत्र प्रभुत्व स्थापित करने में कठिनाई हुई परन्तु अवध, बंगाल और हैदराबाद में ऐसा नहीं हुआ। पंजाब में व्याप्त इस राजनैतिक अस्थिरता का सिक्खों ने पूरा-पूरा लाभ उठाया और अंतत: पंजाब में उन्होंने एक स्वायत्त राज्य की स्थापना की। आगे के भाग में हम विवरण करेंगे कि सिक्खों ने किस प्रकार से एक धार्मिक समुदाय से धीरे-धीरे स्वयं को एक स्वतंत्र राजनैतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया।

5.3 सिक्ख धर्म: धार्मिकता से राजनैतिक पहचान तक

15वीं तथा 16वीं सदियों में धार्मिक आंदोलनों की श्रृंखलाओं ने भारतीय धार्मिक विश्वासों को पुन: जागृत किया। इन्हीं आंदोलनों के गर्भ से पंजाब में सिक्ख धर्म का उदय हुआ। इस नये उदित होते संप्रदाय के संस्थापक गुरु नानक थे जिन्होंने अपने अनुयायियों को सिक्ख नाम दिया जिसका साहित्यिक अर्थ है सिखने वाला या अनुशासित। कुछ ही समय में इस नये धर्म का प्रसार होने लगा, लोगों के लिए सिक्ख नाम एक व्यापक अर्थ वाला हो गया, किसी जाति का प्रतीक न होकर एक धर्म बन गया। गुरु नानक का धार्मिक आंदोलन शांतिपूर्वक, व्यापक था और इसका लक्ष्य धर्म निरपेक्ष जीवन के साथ एकता स्थापित करना था।

गुरु नानक के बाद अन्य नौ गुरु हुए जिन्होंने 200 वर्षों में न केवल सिक्ख धर्म को संगठित तथा शक्तिशाली किया बल्कि मुगल सम्राटों तथा उनके सूबेदारों को चुनौतियों का सामना करने के लिए शक्तिशाली लड़ाकू ताकत बना दिया। इन गुरुओं के सिक्ख धर्म के विकास में योगदान इस प्रकार थे:

- गुरु आनन्द ने गुरुमुखी लिपि को विकसित किया,
- गुरु रामदास ने अमृतसर के मंदिर की आधारशिला रखी,
- गुरु अर्जुन देव ने आदि ग्रंथि को संकलित किया,
- गुरु हरि गोविन्द ने सिक्खों को सैन्य कला एवं युद्ध नीतियों में प्रशिक्षित किया,
- गुरु गोविन्द सिक्ख ने सिक्खों को खालसा संगठनात्मक केन्द्र बिन्दु के साथ एक भली भांति संगठित लड़ाकू ताकत के रूप में संगठित किया।

गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के साथ गुरुओं की परंपरा का अंत हो गया और सिक्ख धर्म का नेतृत्व उनके विश्वसनीय शिष्य बंदा बैरागी के हाथों में चला गया जिसकी लोकप्रियता बंदाबहादुर के नाम से हुई। बंदा बहादुर ने मुगल सेनाओं के विरुद्ध 8 वर्षों तक प्रबल संघर्ष किया। 1715 में उसको गिरफ्तार कर फांसी दे दी गई। बंदा की फांसी के बाद लगभग 10 वर्षों तक मुगल अधिकारियों ने सिक्ख विद्रोहियों पर नियंत्रण करने के लिए अथक प्रयास किये। परन्तु उनका यह प्रयास सफल न हुआ। ऐसे बहुत से कारण थे जिनकी सहायता से सिक्खों ने स्वयं को पंजाब में सबसे शक्तिशाली राजनैतिक ताकत के रूप में संगठित एवं स्थापित किया। ये कारण निम्नलिखित थे:

- 18वीं सदी के प्रारंभिक दशकों से मुगल साम्राज्यवादी प्रभुत्व का कमजोर पड़ना,
- नादिरशाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण,

- मराठा आक्रमण,
- प्रांतीय प्रशासन में एकरूपता तथा एक सूत्र संपर्क का अभाव, और
- साम्राज्य के प्रभुत्व की बहुत से स्थानीय सरदारों तथा जमींदारों के द्वारा अवमानना।

18वीं सदी पंजाब में इन सभी कारणों से बड़ी अराजक स्थिति पैदा हो गई और इस स्थिति से सिक्खों का सबसे शक्तिशाली ताकत के रूप में उदय हुआ। अहमद शाह अब्दाली की मौत उत्तर भारत में अफगान साम्राज्य के आधिपत्य की मृत्युघण्टी साबित हुई। अफगान शक्ति के पतन के साथ ही सिक्ख मसलों ने पंजाब में प्रमुख भूमिका प्राप्त कर ली और क्रमशः इनके सरदारों ने स्वतंत्र रियासतों को बनाने में सफलता प्राप्त की।

सिक्खों ने मुगल अधिकारियों के दमन का सामना करने के लिए स्वयं को बहुत से छोटे तथा अत्यंत गतिशील गुटों में संगठित किया। इन गुटों को जत्थे तथा इनके कमाण्डरों को जत्थेदार कहा जाता था। एकताबद्ध कार्यवाही की आवश्यकता को महसूस करते हुए जत्थेदारों ने एक संघ बनाने की कोशिश की और इसके लिए वे बैसाखी तथा दिवाली के त्यौहारों के अवसरों पर एक समूह के रूप में मिलते थे। यद्यपि इन बैठकों को स्थायी तौर पर आयोजित न किया जा सका परन्तु इससे विभिन्न गुटों के बीच एकता को बढ़ावा मिला।

अफगानों के द्वारा मुगलों तथा मराठों की पराजय से लाभ उठाते हुए सिक्खों ने पंजाब में अपने आधार को और सुदृढ़ किया। 1765 के बाद से सिक्खों का राजनैतिक शक्ति के रूप में तेजी से विकास हुआ और जिसकी अंतिम परिणिति 19वीं सदी के प्रारंभ में स्वतंत्र राज्य की स्थापना के रूप में हुई। 18वीं सदी के उत्तरार्ध में बहुत छोटे गुटों ने स्वयं को 12 क्षेत्रीय संघों या मिसलों में स्थानीय सरदारों के नेतृत्व में पुनः संगठित किया। इस प्रकार:

- भंगी मिसल का नियंत्रण झेलम तथा सिंधु नदियों के बीच के क्षेत्रों लाहौर एवं अमृतसर पर था।
- रामगढ़ी मिसल का नियंत्रण जालंधर के दोआब पर था,
- कन्हैया का नियंत्रण रैकरी क्षेत्र पर,
- सिंहपुरियों का नियंत्रण सतलज नदी के पूर्वी तथा पश्चिमी इलाकों पर
- अहलूवालिया मिसल का नियंत्रण राजकोट तथा कपूरथला पर,
- सुकरचकिया का आधिपत्य गुजरनवाला, वजिराबाद पर, तथा
- फुलकिया का नियंत्रण मालवा तथा सिरहिन्द पर था।

ये मिसलें अपने मूल रूप में समानता के सिद्धांत पर आधारित थी। मिसलों के मामलों के बारे में निर्णय करते समय प्रत्येक सदस्य को समान रूप से बोलने का अधिकार था और अपने-अपने संगठन के मुखिया तथा अन्य अधिकारियों को चुनने का भी अधिकार था। मिसल के प्रारंभिक चरण में उसकी एकता तथा लोकतांत्रिक चरित्र अफगान आक्रमण के खतरे के टल जाने के बाद धीरे-धीरे समाप्त हो गया। समय के इस घटना चक्र में शक्तिशाली सरदारों के उदय तथा उनके आंतरिक कलह और उनकी विनाशकारी लड़ाइयों के कारण मिसलों का लोकतांत्रिक चरित्र भी समाप्त हो गया। इस आंतरिक संघर्ष ने मिसलों की जड़ ही खोद दी। अन्ततः सुकरचाकिया मिसल के सरदार रणजीत सिंह का। दूसरी मिसलों के सरदारों के बीच एक शक्तिशाली ताकत के रूप में उदय हुआ और उसने हथियारों की शक्ति के बल पर सिक्खों के बीच एकता स्थापित की।

बोध प्रश्न 1

1) पंजाब पर अपने नियंत्रण को बनाये रखने में मुगल सूबेदारों की असफलता की व्याख्या आप कैसे करेंगे ? अपना उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

....

....

....

....

. . . .
. . . .
. . . .
. . . .
. . . .
. . . .

2) सिक्ख धर्म के मूल भूत दर्शन पर तीन पंक्तियाँ लिखिए।

. . . .
. . . .
. . . .
. . . .

3) सिक्ख मिसलों का उदय कैसे हुआ ? सिक्ख राजनीति में उनकी क्या भूमिका थी ? उत्तर लगभग 100 शब्दों में दें।

. . . .
. . . .
. . . .
. . . .
. . . .
. . . .
. . . .
. . . .
. . . .

4) प्रत्येक वाक्य के सामने "सत्य" (✓) "झूठ" (×) का निशान लगायें।

अ) पानीपत की तीसरी लड़ाई ने भारत में मराठा संप्रभुता के भाग्य को समाप्त कर दिया। ( )

ब) पंजाब पर विदेशी आक्रमण सिक्ख सरदारों के प्रभुत्व का दमन करने में असफल रहा। ( )

स) गुरु गोविन्द सिंह ने सिक्ख धर्म की स्थापना की। ( )

द) गुरु अर्जुन देव ने गुरुमुखी लिपि को विकसित किया। ( )

फ) मिसलों को स्वायत्तता के सिद्धांत पर संगठित किया गया। ( )

5.4 सिक्ख राज्य का उदय

पंजाब के राजनैतिक घटनाचक्र में नया मोड़ रणजीत सिंह के उदय के साथ आया। जिस प्रक्रिया का प्रारंभ 18वीं सदी में सिक्ख क्षेत्रीय संगठन की स्थापना के साथ हुआ था उसकी चरम पराकाष्ठा 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में पंजाब में रणजीत सिंह द्वारा स्थापित स्वायत्त राज्य की स्थापना के रूप में हुई। रणजीत सिंह सुकर चकिया मिसल के सरदार महान सिंह का पुत्र था। 1792 में जिस समय उसके पिता की मृत्यु हुई उस समय वह केवल 12 वर्ष का था। उसे उत्तराधिकार में जो राज्य मिला था उसके अंतर्गत गुजरनवाला, वजीराबाद और सियालकोट रोहतास तथा पिण्डदन्दान खाँ के क्षेत्र आते थे। यह वह समय था जबकि सिक्ख मिसलों का आपसी संघर्ष सर्वोच्चता के लिए चल रहा था। सिक्ख सरदारों के आपसी संघर्षों

और ज़मन शाह के नेतृत्व में 1795, 96 तथा 98 में अफगान आक्रमणों ने रणजीत सिंह की अपनी ताकत को पंजाब में सुदृढ़ करने में मदद की। रणजीत सिंह ने सफलतापूर्वक सिक्ख मिसलों की स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया और उनको एक मात्र राजनैतिक आधिपत्य के अधीन कर लिया।

चित्र-10 रणजीत सिंह

प्रारंभिक कुछ वर्षों में रणजीत सिंह के सम्मुख समस्या अपने दीवान लखपत राय की बढ़ती शक्ति और उसकी माता माई मलवाई द्वारा, प्रशासन पर नियंत्रण करने के प्रयासों को रोकना था। उसने अपने दीवान से छुटकारा पाने के लिये उसको कैथाल के एक खतरनाक अभियान पर भेज दिया और जहाँ पर उसको मार दिया गया। माई मलकाई की हत्या भी संदेहास्पद ढंग से कर दी गई। अपने घरेलू राज्य के मामलों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने के बाद रणजीत सिंह ने मसलों के सरदारों के विरुद्ध अभियान चलाया। कन्हैया मसल सरदार तथा उसकी सास रानी सदा कौर के सक्रिय सहयोग से उसने रामगढ़ी मसल पर आक्रमण किया। कन्हैया मसल के क्षेत्र पर अधिकार कर लेने के कारण रामगढ़ी मसल को सजा देने के लिए इस अभियान को चलाया गया था। रामगढ़ी मसल को पराजित कर उसके मुख्य नगर मियानी पर अधिकार कर लिया गया।

शक्तिशाली रामगढ़ी मिसल के अपमानजनक समर्पण के बाद रणजीत सिंह ने अपना ध्यान लाहौर पर केन्द्रित किया। 1747 में अफगान नेता ज़मान शाह ने लाहौर पर अपना नियंत्रण कायम कर लिया। परन्तु ईरान के शाह के साथ मिलकर उसके भाई द्वारा उसके विरुद्ध षडयंत्र करने के कारण जमान शाह को वापस लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसने लाहौर को अपने सूबेदार शाहची खाँ के अधीन कर दिया। ज़मान शाह के वापस लौट जाने के कारण रणजीत सिंह को लाहौर पर अधिकार करने के लिए सुअवसर मिल गया। गुजरात के साहिब सिंह तथा पिण्डीवाला के मिलखा सिंह के गठबंधन के साथ उसने शाहची खाँ पर आक्रमण किया और 1799 में लाहौर पर अधिकार कर लिया। लाहौर के बाद उसने भांजी मसल पर

आक्रमण कर किसी कड़े विरोध के बिना अमृतसर तथा उनके अन्य क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। लाहौर और अमृतसर का स्वामी होने के बाद रणजीत सिंह ने स्वयं को इसका सर्वमान्य राजा घोषित करते हुए पंजाब में संप्रभु संपन्न सिक्ख राजतंत्र की नींव रखी।
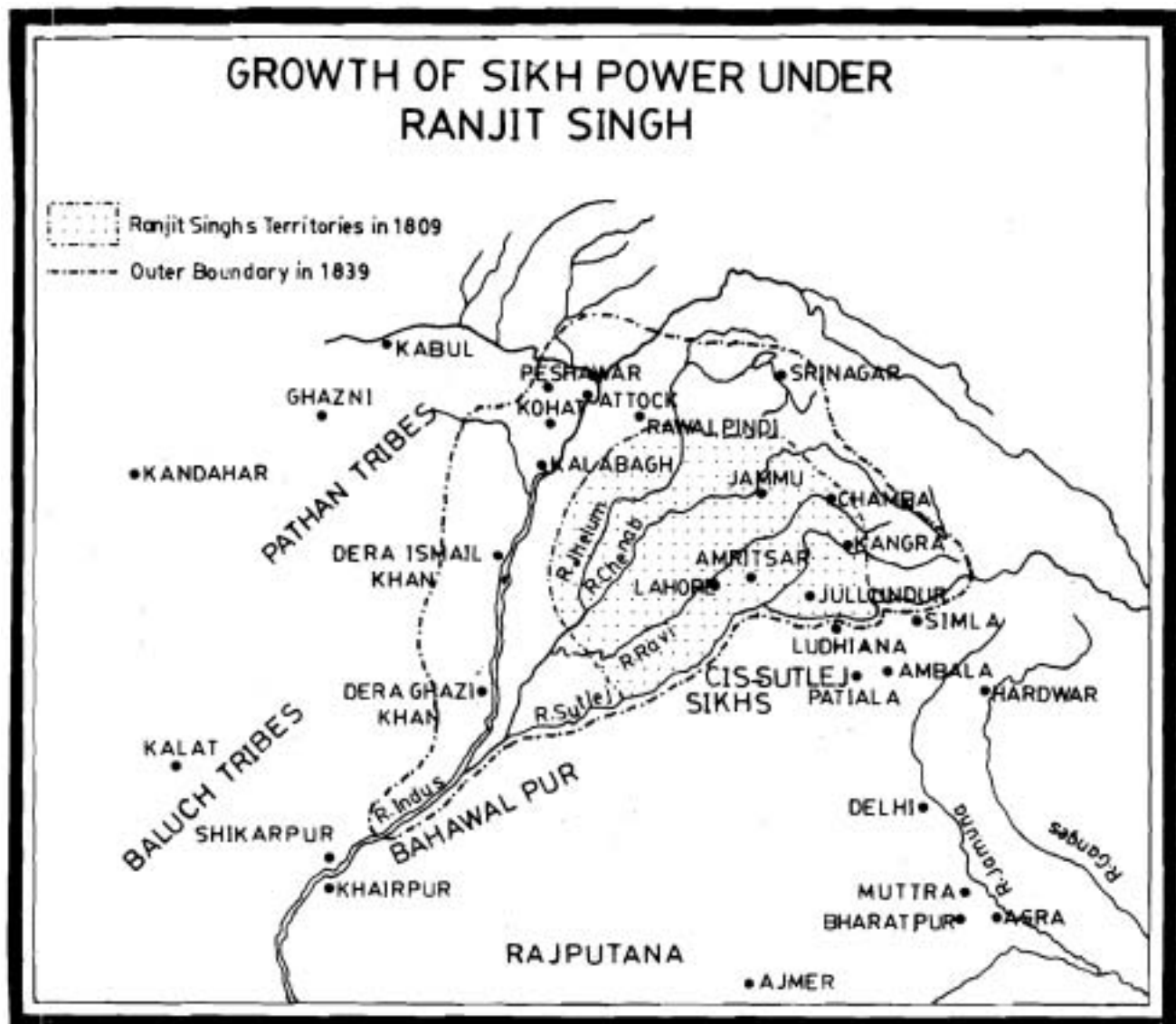
मानचित्र-6

अपनी स्थिति को और सुदृढ़ करने के लिए रणजीत सिंह ने अन्य राज्यों की ओर अपने अभियान को जारी रखा। उसने जम्मू को अधीन कर लिया, मिरोवाल, नरोवाल, सियालकोट, दिलावरगढ़, वजीराबाद पर भी अधिकार कर लिया और उसने कांगड़ा के राजा संसार चंद तथा कासूर के पठान सरदार निजामुद्दीन के अभिमान को तोड़ दिया। काबुल की मुसलमान रियासतें जैसे कि झंग तथा साहीवाल समर्पण करने को तैयार थी और मुलतान के गवर्नर मुजफ्फर खाँ ने रणजीत सिंह को ढेर सारे उपहारों के साथ बधाई दी। परन्तु मुल्तान ने अन्ततः 1818 में मीर दीवान चन्द के नेतृत्व में सिक्ख सेनाओं के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। कश्मीर 1819 तक जीत लिया गया और 1820 में रणजीत सिंह को संपूर्ण पंजाब का शासक मान लिया गया जिसके अंतर्गत सिंधु से सतलज तक का क्षेत्र, कश्मीर और तिब्बत की

सीमा तक पर्वतीय क्षेत्र आता था। सिंधु नदी के पार के डेरा इस्माइल, डेरा गाजी खान, खैराबाद और अंततः पेशावर (1834) सभी को सिक्ख शासन के अधीन कर लिया गया। रणजीत सिंह के अधिकारियों ने रणजीत सिंह द्वारा स्थापित राज्य की क्षेत्रीय अखण्डता को 1845 तक बनाये रखा तथा कुछ नये छोटे क्षेत्रों को भी उसमें शामिल कर लिया, परंतु विभिन्न चरणों में सिक्ख राज्य ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था के अधीन हो गया और 1849 में अंतिम रूप से इसको पूर्णतः ब्रिटिश साम्राज्य में लिया गया। इस प्रकार मुगलों के भूतपूर्व प्रांत लाहौर में सिक्खों का सर्वभौम शासन 1765 से 1845 तक रहा।

चित्र-11 महाराजा का पदक: एकबाले-ए-पंजाब

5.5 सिक्ख राज्य और अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी

जिस समय सिक्ख पंजाब में अपना क्षेत्रीय आधार सुदृढ़ करने की कोशिश कर रहे थे ठीक उसी समय अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी स्वयं को भारत में एक राजनैतिक ताकत के रूप में स्थापित करने की प्रक्रिया प्रारंभ कर चुकी थी। सिक्खों की गतिविधियों का क्षेत्र उत्तरी भारत था तो ईस्ट इंडिया कंपनी का पूर्वी भारत। परंतु अंग्रेज़ों ने पूर्वी भारत में अपना नियंत्रण कायम करने के बाद अखिल भारतीय साम्राज्य स्थापित करने की लालसा से उत्तरी भारत की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इसलिए अंग्रेज़ों की प्रसार की इस योजना के साथ सिक्ख राज्य का टकराव निश्चित था।

1808 के मध्य तक अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी लाहौर के शासक के साथ विश्वसनीय संबंध बनाये रखने की इच्छुक थी क्योंकि उत्तर-पश्चिमी सीमाओं से होने वाले किसी भी विदेशी आक्रमण के विरुद्ध यह रक्षक राज्य की भूमिका निभा सके। लाहौर के शासक के प्रति अंग्रेज़ों के इस दृष्टिकोण का कारण अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के दबाव और पूरब की ओर नेपोलियन के अभियान को बढ़ता खतरा था। परन्तु 1808 के अंत में अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में परिवर्तन हो गया। फ्रांस के विरुद्ध स्पेन वासियों का विद्रोह, इंग्लैंड तथा टर्की के बीच संधि और 1809 में इंग्लैंड तथा ईरान के बीच संधि ऐसी घटनायें थी जिनसे फ्रांस के हमले की संभावना क्षीण पड़ गयी। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में आये इस परिवर्तन का प्रभाव लाहौर के शासक के साथ ब्रिटिश संबंधों पर भी पड़ा। अंग्रेज़ अब सतलज नदी के पूरब में स्थित सिक्ख राज्यों के प्रति

अपने सहानुभूति दिखाने लगे और ये राज्य भी रणजीत-सिंह के विरुद्ध ब्रिटिश संरक्षण चाहते थे। अंग्रेज़ों ने रणजीत सिंह से उसकी सेना सतलज नदी के उत्तर से वापस बुलाने और लुधियाना की ओर जाने वाली ब्रिटिश सेना की सहायता के लिए कहा। रणजीत सिंह ब्रिटिश सैन्य शक्ति की सर्वोच्चता से भली-भाँति परिचित था और इसलिए उसने सतलज नदी के पूरब के सिक्ख रियासतों पर अपना दावा छोड़ दिया। अंग्रेज़ों तथा रणजीत सिंह के मध्य एक समझौता हुआ जिसको अमृतसर की संधि के नाम से जाना जाता है।

1809 की अमृतसर संधि के बाद से और 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु तक दोनों शक्तियों के बीच कोई बड़ा तनाव पैदा नहीं हुआ। अंग्रेज़ों ने उसको सतलज नदी के पूरब के क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करने की इजाजत नहीं दी, परन्तु उसके अधीन क्षेत्र में हस्तक्षेप भी नहीं किया। रणजीत सिंह की मृत्यु हो जाने से सिक्ख राज्य की स्वतंत्रता का आधार कमजोर पड़ा और एक दशक के अंदर ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद की फैलती मजबूत भुजाओं ने सिक्ख राजतंत्र की ताकतवर रचना को अपने अंदर समेट लिया। रणजीत सिंह का सबसे बड़ा पुत्र खड़क सिंह उत्तराधिकारी के रूप में लाहौर के सिंहासन पर बैठा। परन्तु वह रणजीत सिंह का योग्य उत्तराधिकारी नहीं था। उसके शासक बनते ही दरबार में मौजूद विभिन्न गुट सक्रिय हो गये। 1839 में खड़क सिंह की अचानक मृत्यु हो जाने और उसके पुत्र राजकुमार नौनिहाल सिंह की मृत्यु उस समय हो जाने से जिस समय वह अपने पिता के दाह संस्कार से वापस लौट रहा था, पंजाब में अराजकता की स्थिति पैदा हो गयी। लाहौर के सिंहासन को प्राप्त करने के लिए बहुत से गुटों द्वारा किये गये दावों और प्रतिदावों ने अंग्रेज़ों द्वारा निर्णायक कार्यवाही करने का मार्ग साफ कर दिया।

प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध 1845 में लड़ा गया और कुल मिला कर दोनों शक्तियों के मध्य पाँच युद्ध हुए। अंग्रेज़ों ने लाहौर पर अधिकार कर लिया और 1846 में सिक्खों को लाहौर संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया। इस संधि से सिक्ख राजतंत्र का अंत हो गया और पंजाब अंग्रेज़ों के ऊपर निर्भर एक राज्य बन गया। परन्तु 1849 तक पंजाब का पूर्ण विलय ब्रिटिश साम्राज्य में नहीं किया गया। दूसरे आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1849) में अंग्रेज़ों ने सिक्खों के विरुद्ध अंतिम विजय प्राप्त की और लार्ड डलहौजी ने सिक्ख राज्य का भारत के ब्रिटिश साम्राज्य में पूर्ण विलय कर लिया। इसी के साथ पंजाब की स्वायत्तता का अंत हो गया और यह भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्य का एक अंग बन गया। खण्ड 3 की इकाई 11 में हम अंग्रेज़ों की पंजाब विजय के बारे में विस्तृत रूप से विवेचन करेंगे।

बोध प्रश्न 2

1) रणजीत सिंह के राज्य की क्षेत्रीय सीमाओं का वर्णन कीजिए।

....
....
....
....
....
....

2) रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद सिक्ख राज्य में क्या हुआ ? उत्तर लगभग 60 शब्दों में दें।

....
....
....
....
....
....
....

....

....

....

5.6 राज्य का संगठन

राज्य के संगठन में सिक्ख शासकों ने मुगल व्यवस्था तथा अपने स्वयं के शासन की जरूरतों के बीच संतुलन कायम करने का प्रयास किया। अधिकतर मामलों में क्षेत्रीय विभाजनों और अधिकारियों की कार्यशैलियों में पुरानी व्यवस्था को बनाये रखा गया। लेकिन उन स्थानों पर जहाँ तत्कालीन स्थिति में परिवर्तनों की आवश्यकता पड़ी वहाँ पर उन्होंने नयी व्यवस्था को अपनाने का प्रयास किया। राज्य संगठन के मामलों में धार्मिक दृष्टिकोण की अपेक्षा प्रशासनिक आवश्यकताओं ने उनका दिशा निर्देशन किया। भिन्न-भिन्न जातियों, धार्मिक, भाषाई तथा आर्थिक संगठनों और बहुत संख्या में स्वायत्त रियासतों के अस्तित्व के कारण ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था को अपनाया गया जिसके अंतर्गत इन विभिन्न शक्तियों को एक साथ एक ही प्रभुत्व के अधीन रखा जा सके। इसलिए सिक्ख धर्म के मठों के साथ उनकी पहचान को बनाये रखने के लिए सिक्ख शासकों ने प्रशासन में धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण को अपनाया।

5.6.1 क्षेत्रीय प्रशासन

सिक्खों के अधीन प्रशासनिक विभाजन लगभग मुगल साम्राज्य के समान ही था। पूरे राज्य का विभाजन सूबों में, सूबों का परगनों में और परगनों का टप्पाओं या ताल्लुकों में किया गया था। प्रत्येक ताल्लुक के अंतर्गत कुछ गाँव आते थे। परंतु मुगल समय के साथ तुलना करने पर प्रत्येक इकाई का आकार काफी छोटा था। राजा प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी था। प्रशासन में उसकी सहायता करने के लिये अनेक अधिकारी थे जो राजा के प्रति उत्तरदायी थे। केन्द्र में राजस्व प्रशासन में राजा की मदद दीवान करता था और राजा के बाद वह सबसे शक्तिशाली अधिकारी होता था। प्रांतीय स्तर पर बहुत से अधिकारी निम्न प्रकार से थे:

नज़ीम	—	(सूबे का मुखिया)
कारदार	—	(परगनाधिकारी)
चौधरी	—	(टप्पा का मुखिया)
मुकद्दम	—	(एक गाँव का मुखिया)

इनके अतिरिक्त कानूनगो, पटवारी आदि भी थे। इन सब अधिकारियों के कार्य थे —

- राजस्व एकत्रित करना,
- कृषि को बढ़ावा देना,
- व्यवस्था को बनाये रखना, और
- अपराधों का दमन करना।

इन अधिकारियों की न्यायिक शक्तियाँ सीमित थीं। छोटे-मोटे मामलों से लेकर अति महत्वपूर्ण मामलों का महाराज, काज़ी और ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमणशील न्यायाधीश निपटारा करते थे। उच्च अधिकारियों की नियुक्ति सामान्यत: शासक द्वारा की जाती थी और उनके पद पैत्रक नहीं होते थे। नियुक्ति के समय योग्यता को प्राथमिकता दी जाती थी। उच्च पदों पर विभिन्न गुटों एवं विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोग थे। अधिकारियों को वेतन के बदले जागीर दी जाती थी परंतु रणजीत सिंह के शासन काल के उत्तरार्ध में अधिकतर अधिकारियों को वेतन की अदायगी नकद की जाने लगी थी।

केन्द्रीय प्रभुत्व का विभिन्न भागों पर नियंत्रण मुख्य रूप से केन्द्रीय प्रभुत्व के स्थान की समीपता के ऊपर निर्भर करता था। वास्तविक शाही नियंत्रण के आधार पर इतिहासकारों ने

HIMALAYA
SRINAGAR
RAWALPINDI
TARAGARH
JEHLAM
BHIMBER
JAMMU
GUJRAT
SIALKOT
GUJRANWALA
KANGRA
BATALA
AMRITSAR
LAHORE
KAPURTHALA
JALANDHAR
LUDHIANA
SINDH SAGAR DOAD
CHAJ DOAD
RACHNA DOAD
BARI DOAD
BIST JALANDHAR DOAD
R Jehlam
R Chinab
R Ravi
R Satlej
VASSAL PRINCIPALITIES IN THE HILLS

मानचित्र-7
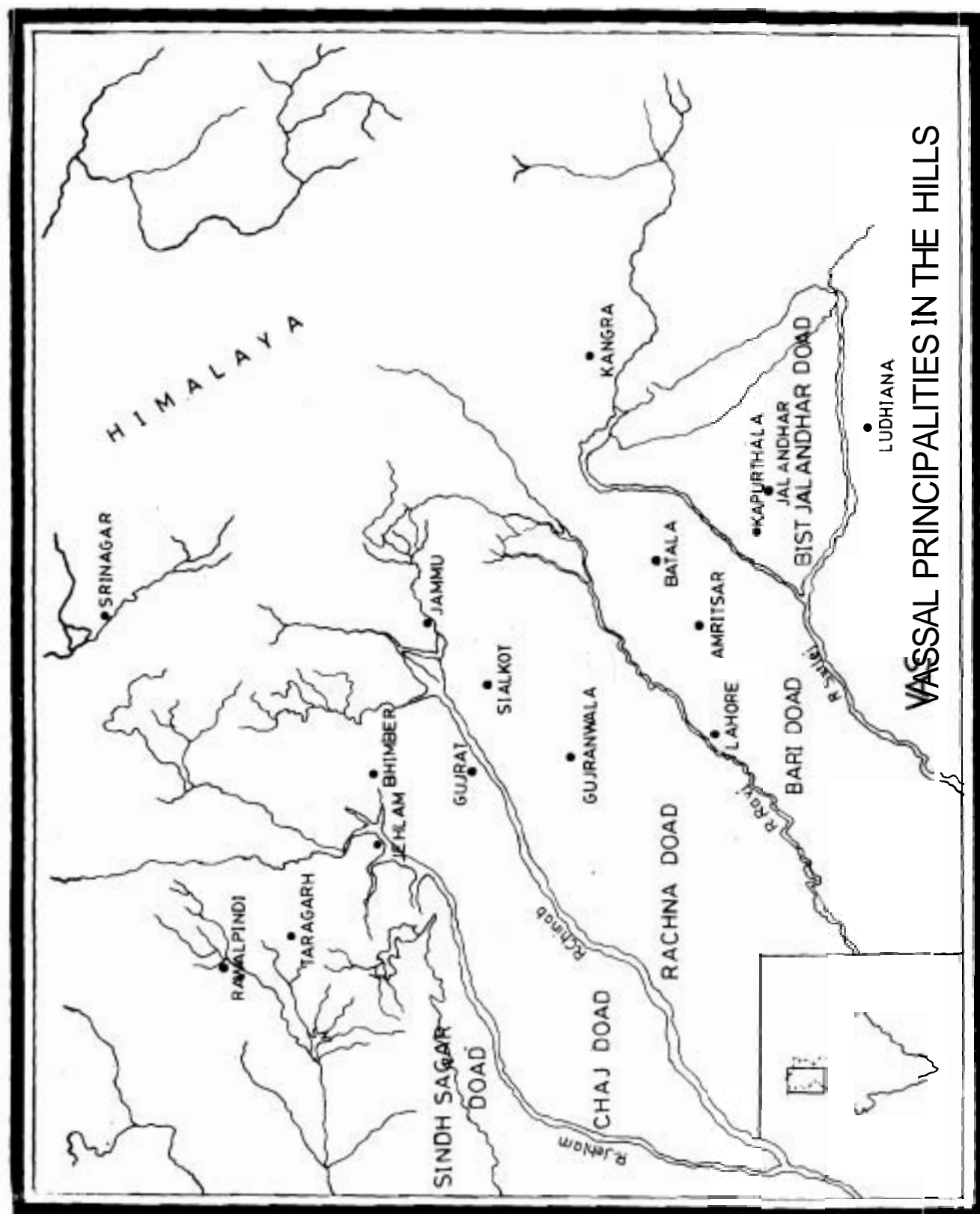
सिक्ख राज्य के क्षेत्र का विभाजन तीन मंडलों में निम्न प्रकार से किया है:

- केन्द्रीय मंडल, यह क्षेत्र सतलज से झेलम नदी तक फैला था और इस पर सबसे पहले नियंत्रण किया गया तथा यह राजधानी के सबसे नजदीक था।
- मध्य क्षेत्रीय मंडल, सिंधु तथा झेलम के मध्य का क्षेत्र और इसके अंतर्गत मुख्य रूप से मुल्तान और कश्मीर का सूबा था।
- सीमांत मंडल, इसके अंतर्गत पेशावर, डेरा इस्माइल खान, डेरा गाजी खान आदि क्षेत्र आते थे।

केन्द्रीय मण्डल पर शाही नियंत्रण सबसे अधिक था तथा यहाँ पर अधिकारियों की नियुक्तियाँ और उनके कार्यों पर केन्द्र का कड़ा नियंत्रण होता था। अन्य दोनों मण्डलों में केन्द्रीय नियंत्रण तुलनात्मक रूप से कम था और समय-समय पर स्थानीय अधिकारियों की नियुक्तियाँ प्रांतीय सूबेदारों के द्वारा स्वयं की जाती थी। इन सीधे शासित होने वाले क्षेत्रों के अतिरिक्त, पूरे सिक्ख शासन काल के दौरान विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों में स्वायत्तता प्राप्त कुछ रियासतें भी थीं। इन परतंत्र रियासतों को निम्नलिखित तीन समूहों में विभाजित किया गया था:

- सतलज और रावी नदियों के बीच स्थित पूर्व समूह,
- रावी और चेनाब नदियों के बीच स्थित केन्द्रीय समूह,
- चेनाब तथा सिंधु नदियों के बीच का पश्चिमी समूह।

इन रियासतों के सरदारों ने सिक्ख शासकों के सामन्ती प्रभुत्व को स्वीकार किया और वे उनको वार्षिक नजराना अदा करते थे। लेकिन अपनी रियासत के अंतर्गत उनको पर्याप्त स्वतंत्रता थी और सिक्ख शासकों की राजस्व संबंधी नीतियों का अनुसरण करने के लिए बाध्य नहीं थे। फिर भी, कुछ रियासतों के शासकों ने सिक्ख शासकों की सामान्य प्रशासन तथा सैनिक अभियानों में मदद की और नजीम एवं इजारेदार की हैसियत से कार्य किया।

5.6.2 राजस्व प्रशासन

आर्थिक लक्ष्यों के लिए पंजाब को तीन वर्गों में विभाजित किया गया। पहले वे क्षेत्र थे जिनको किराये पर दिया गया, दूसरे वे क्षेत्र थे जिनको अनुदान के रूप में दिया गया तथा तीसरे वे थे जिन पर सीधे प्रशासन किया गया था। इन क्षेत्रों को तीन वर्गों के प्रशासनकर्त्ताओं को सौंपा गया:

- जनता का सम्पन्न वर्ग जिनका कार्य राजस्व वसूली का था।
- सेना के वे सरदार जिनको अपने क्षेत्रों में पूर्ण अधिकार इस आशय के साथ दिये गये थे कि आवश्यकता पड़ने पर अपने सैन्यबल को भेजेंगे।
- कर इकट्ठा करने वाले राज्य के कर्मचारी जिनके वेतन अधिकतर उनके अनुलाभों पर निर्भर करते थे।

देश की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि थी इसलिए देश के धन का मुख्य साधन भी भूमि से प्राप्त होने वाला राजस्व था। भू-राजस्व की वसूली बटाई, कंकुट और जब्ती व्यवस्था के अंतर्गत होती थी।

- बटाई: फसल की कटाई के बाद जो वास्तविक पैदावार होती थी उसी को फसलों में हिस्सेदारी का आधार बनाया जाता था। यह व्यवस्था मुगल काल से ही प्रचलित थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत शासकों को फसल की कटाई पर लगातार निगरानी रखनी पड़ती थी अन्यथा उनको वास्तविक हिस्से से वंचित होने की संभावना रहती थी।
- कंकुट: इस व्यवस्था के अंतर्गत खड़ी फसल पर या फसल के कटाई से पूर्व सरकार का हिस्सा निश्चित किया जाता था। यह व्यवस्था भी मुगल शासन के दौरान प्रचलित थी। इस व्यवस्था का एक लाभ यह भी था कि इसके अंतर्गत सरकार को लगातार फसलों पर निगरानी नहीं रखनी पड़ती थी क्योंकि फसल की कटाई से पूर्व ही सरकार अपने हिस्से का निर्धारण कर लेती थी जिससे सरकार अपना बजट बना सकती थी।
- जब्ती: इस व्यवस्था के अंतर्गत फसलों के आधार पर आकलन करने के बाद नकद भुगतान

करना होता था। सामान्यत: कपास, नील, गन्ना, तम्बाकू आदि नकद फसलों पर यह व्यवस्था लागू होती थी।

भू-राजस्व का स्तर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भिन्न-भिन्न था। सामान्यत: सरकार का हिस्सा उत्पाद के दो-तिहाई से लेकर एक तिहाई तक होता था। राजस्व का निर्धारण जमीन की गुणवत्ता, सिंचाई की प्रणाली और जुताई करने पर आये खर्च के आधार पर किया जाता था। भू-राजस्व के अतिरिक्त और भी अन्य कर थे जिनको अबवाब के नाम से जाना जाता था तथा इनको किसानों से ही वसूल किया जाता था। राजस्व को नकद तथा वस्तु दोनों में इकट्ठा किया जाता था। इस प्रकार हम पाते हैं कि राजस्व प्रशासन में भी मुगल व्यवस्था की तुलना में कुछ अधिक परिवर्तन नहीं हुए थे।
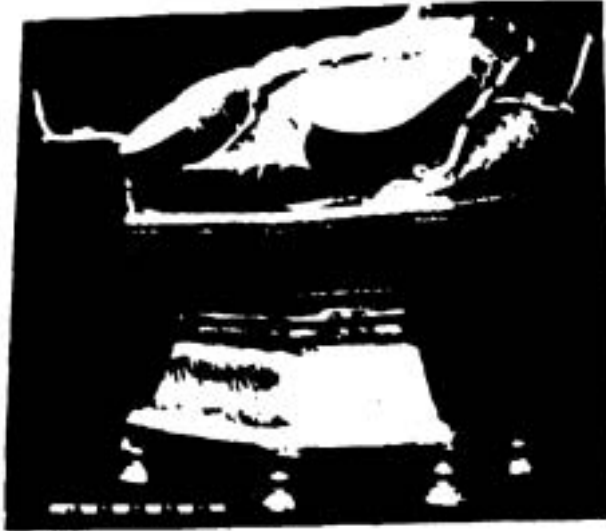
चित्र-12 रणजीत सिंह की मोहरें

5.7 सिक्ख राजनीति का चरित्र

अभी तक हमने सिक्ख राज्य तथा उसके संगठनात्मक ढांचे के विकास के विषय में विवेचन किया है। लेकिन सिक्ख राजनीति का क्या चरित्र था ? इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि सिक्ख राजनीति को मूलभूत आधार सिक्ख गुरुओं के उपदेशों ने उपलब्ध कराया। मध्य काल में सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक अन्यायों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए सिक्खों के बीच जो आंदोलन पैदा हुआ वह 18वीं सदी के दौरान अंतत: एक राजनैतिक आंदोलन में

परिवर्तित हो गया। इसलिए सिक्ख राजनीति की आधारशिला नैतिक नियमों और गुरुओं की लोकतांत्रिक परंपराओं के आधार पर रखी गयी। इस लोकतांत्रिक परंपरा की अभिव्यक्ति मिसल काल की सिक्ख राजनीति में गुरमत, दल खालसा, खालसा के नाम पर शासन करने आदि जैसी बहुत सी विशेषताओं में पायी जाती है।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि मिसल काल के दौरान की सिक्ख राजनीति के चरित्र के विषय में सभी इतिहासकार एक मत नहीं हैं। कुछ इतिहासकारों के अनुसार मिसलें अपने चरित्र में धार्मिक,राजनैतिक व्यवस्था वाली थी परन्तु दूसरी ओर यह भी मत व्यक्त किया गया है कि मिसल के सरदारों के कार्य करने से स्पष्ट है कि अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्रतापूर्वक कभी-कभी अपने हितों के अनुरूप कार्य करते थे। सरबत खालसा की सभाओं में उनकी उपस्थिति आवश्यक नहीं थी। वे इन सभाओं में आपात स्थिति पर विचार-विमर्श करने के लिए ही शामिल होते थे या पारस्परिक हितों के मामलों के लिए। इन सभाओं के निर्णयों को मानना उनके लिए अनिवार्य नहीं था। परन्तु लोकतांत्रिक परंपराओं का एक ढाँचा होने के बावजूद भी मिसलों के आंतरिक संगठन में बहुत अधिक लोकतंत्र नहीं था। व्यक्ति विशेष की सरकार के सिद्वांत का प्रचलन ही अधिक था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मिसलों का एक संघ था परन्तु एक मिसल के अंतर्गत सरदार या मिसल का मुखिया पूर्ण रूप से स्वतंत्र होता था। बाह्य खतरों के कारण मिसलों के संघ का अस्तित्व था। आंतरिक मामलों में संघ का मिसलों पर कोई नियंत्रण न था।

बहुत से स्वतंत्र सरदारों के स्थान पर सिक्ख राजतंत्र के उदय के कारण सिक्ख राजनीति के चरित्र में पुन: और परिवर्तन हुआ। 19वीं सदी में सरदार की व्यक्तिगत स्वायत्तता का अंत हो गया और राज्य के अंतर्गत राजा सर्वोच्च प्रभुत्व संपन्न बन गया। रणजीत सिंह का सिक्ख धर्म का पुस्तकों तथा सिक्ख धर्म में पूरा-पूरा विश्वास था। परन्तु उसने अपने व्यक्तिगत विश्वास (धर्म) का प्रशासन चलाने में कभी भी प्रयोग नहीं किया। पंजाब को विभिन्न जातियों, धार्मिक और भाषाई गुटों के लोगों की भूमि होने के कारण एक धर्म निरपेक्ष प्रशासन की आवश्यकता थी और सिक्ख शासकों ने इस क्षेत्र में अपने शासन को सुदृढ़ करने के लिए उचित ढंग से कार्य किया। प्रशासन के मामलों में धर्म का हस्तक्षेप बिल्कुल भी नहीं किया गया। डॉ. इन्दु बंगा ने लिखा है कि पहाड़ी घाटियों तथा इसी प्रकार के अन्य मैदान वाले स्थानों पर स्वायत्त रियासतों की निरंतरता, जागीरों का आवंटन तथा बिना किसी मदभेद के जमींदार कुलीनों की सेवा, धरमारथ के लिए धार्मिक व्यक्तियों और विभिन्न धर्मों से संबंधित धार्मिक संस्थाओं को दिये जाने वाले अनुदान, इन सबके पीछे मुख्य उद्देश्य सुदृढ़ता की आवश्यकता थी।

बोध प्रश्न 3

1) क्या आप यह सोचते हैं कि सिक्ख तथा मुगल प्रशासनिक व्यवस्थाओं के बीच निरन्तरता थी ? लगभग 60 शब्दों में लिखिये।

....

....

....

....

....

....

2) सिक्ख शासकों ने किस प्रकार भू-राजस्व व्यवस्था को संगठित किया ? लगभग 60 शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

3) सूची (ब) में दिये गये शब्दों को सूची (अ) में दिये गये शब्दों से मिलाओ।

अ)	ब)
ग्राम मुखिया	चौधरी
टप्पा का मुखिया	पटवारी
पारगनाधिकारी	करदार
गाँव का मुनीम	मुकद्दम
राजस्व विभाग का मुखिया	नजीम
सूबे का प्रमुख	दीवान

5.8 सारांश

इस इकाई में हम देख चुके है कि लगातार होने वाले विदेशी आक्रमणों और सिक्ख सरदारों के विद्रोहों के कारण पंजाब में मुगल प्रशासन समाप्त हो गया था। इन व्याप्त अस्थिर राजनैतिक परिस्थितियों में सिक्खों का उदय एक राजनैतिक ताकत के रूप में हुआ और उन्होंने पंजाब में एक स्वायत्त राज्य की स्थापना की। रणजीत सिंह के नेतृत्व तथा उसकी राजनैतिक कुशलता ने इस प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। मुगल व्यवस्था की तुलना में प्रशासन में बहुत अधिक संस्थात्मक परिवर्तन नहीं हुए और अपने शासन को सुदृढ़ करने के लिये सिक्ख शासकों ने प्रशासन में धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण को अपनाया। परन्तु राजतंत्र की आंतरिक कमजोरियों तथा गुटबाजियों, जो राज्य के अंदर जीवित रहीं, के कारण इसने ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था के सम्मुख घुटने टेक दिये।

5.9 शब्दावली

अबवाब: भू-राजस्व के साथ-साथ अन्य कर (उत्पादक कर, चुंगी) भी किसानों से वसूल किये जाते थे।

आदि ग्रंथ: सिक्ख पंथ की धार्मिक पुस्तक।

दल खालसा: एक से अधिक सरदार की संयुक्त सेनायें जिनका गठन किसी विशेष उद्देश्य के लिये किया गया हो परन्तु अस्थायी तौर पर।

धरमारथ: भूमि अनुदान जिसे धार्मिक तथा स्वयंसेवी संस्थाओं को दिया गया हो ।

फौजदार: मुगलों के अंतर्गत एक सरकार का प्रशासनिक अधिकारी

गुरमत: गुरु ग्रंथ साहिब के सम्मुख सरबत खालसा में उपस्थित सिक्खों द्वारा पूर्ण बहुमत से पारित प्रस्ताव

पटवारी: गाँव का मुनीम

सरबत खालसा: सम्पूर्ण खालसा, सिक्ख पंथ की सभा

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपका उत्तर सिक्ख सरदारों के विद्रोहों, विदेशी आक्रमणों, प्रांतीय प्रशासन के अंदर

व्याप्त गुटबाजी आदि पर आधारित होना चाहिए। देखें भाग 5.2

2) धर्मनिरपेक्ष चरित्र, सार्वभौमिक भ्रातृत्व, गैर-संकुचित समझ आदि के विषय में लिखें। देखें भाग 5.3

3) आप उस पृष्ठभूमि के विषय में लिखें जिसके कारण पंजाब में अपने आधार को सुदृढ करने के लिये बहुत से सिक्ख सरदारों तथा सिक्खों के बीच व्यापक एकता कायम हुई। देखें भाग 5.3

5) अ) ✓, ब) ✓, स) ×, द) ×, ज) ✓

बोध प्रश्न 2

1) भाग 5.4 को पढ़कर अपना उत्तर दें।

2) आपका उत्तर रणजीत सिंह के बाद की राजतंत्र की आंतरिक समस्याओं और इसके ब्रिटिश साम्राज्य में विलय पर केन्द्रित होना चाहिये। देखें भाग 5.5

बोध प्रश्न 3

1) भाग 5.6 को दृष्टिकोण में रखते हुए कुछ उदाहरणों के साथ आप अपने तर्कों को प्रस्तुत करें।

2) आपको अपने उत्तर में राजस्व निर्धारण की व्यवस्थायें, राजस्व की दर तथा एकत्रित करने का तरीकों को शामिल करना चाहिए। देखें उप-भाग 5.6.2

3) मुकद्दम, चौधरी, कारदार, पटवारी, दीवान, नज़ीम।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

बिपन चन्द्र: **आधुनिक भारत।**

ताराचन्द: **भारत का स्वतंत्रता संग्राम**, Vol. 1, Vol. 2.

आर. एल. शुक्ला: **आधुनिक भारत।**

प्रो. सतीश चंद्र: **मुगल दरबार में दलगत राजनीति।**